International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 28-11-2022, Accepted: 14-12-2022, Published: 30-12-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 22-23

नवचेतन और नवजागरण के कवि 'रामधारी सिंह दिनकर'

डॉ. के. चन्द्रा
सहायक आचार्य, एस टी एस एन सरकारी स्नातक महाविद्यालय, कदिरि, श्री सत्य साई जिला, आंध्र प्रदेश, भारत

सारांश

प्रगतिवादी कवियों में दिनकर विशेष महत्व रखते है। प्राचीनतम एवं नवीनतम का भव्य और क्रांतिकारी समन्वय आप की रचनाओं में हुआ। कल्पनाशीलता और सौंदर्यप्रेम से अधिक महत्व आप यथार्थ और संगर्ष को देते है। छायावाद से प्रगतिवाद की ओर एवं प्रगतिवाद से राष्ट्रवाद की ओर आप अग्रसर रहे । आप की भाषा ओजपूर्ण एवं शक्तिमय है। दिनकर जी व्यक्ति की चेतना के व्यापकत्व की विविध प्रतीकों में करते है।

मूल शब्दः कलपनशीलता, ओजपूर्ण, राष्ट्रवाद, क्रांतिकारी

प्रस्तावना

रामधारी सिंह दिनकर जी राष्ट्रीय भावनाओं के कवि हैं। दिनकर जी का नाम प्रगतिवादी विचारक कवियों में लिया जाता है। उन्होने देश की राजनैतिक व सामाजिक परिस्थतियों पर लेखनी चलाई। इनका विद्रोही स्वर ललकार व चुनौती के रूप में प्रस्फूटित होकर देश पर बलिदान होने की प्रेरणा देते हैं। इन्होंने समाज की अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक असमानता के प्रति रोष प्रकट किया जिस कारण वे प्रगतिवादी रचनाएँ कहलायीं। इन्होंने शोषण, उत्पीड़न, वर्ग विषमता की निर्भीकता से निंदा की। दिनकरजी ने श्रमसाध्य जीवन जिया और उनका साहित्य साधन भी अपूर्व था। वे प्रेम के पुजारी एवं सौन्दर्य के उपासक थे। दिनकरजी की राष्ट्रीयता चेतना व व्यापकता उनकी सांस्कृतिक दृष्टि, उनका ओजपूर्ण वाणी एवं काव्यागत तत्वों पर बल, उनका सात्विक जीवन मूल्य उन्हें पारंपरिक रीति से जोड़े रखा है। अतः यह कहा जा सकता है कि दिनकरजी ने हमारे क्रांतिकारी–युग कविता का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व किया। क्रांतिवादीवादियों की सच्ची तस्वीर है दिनकर का काव्य दिनकर जी बीसवीं सदी के ओजस्वी व तेजस्वी कवि थे। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण 'रामधारी सिंह दिनकर जी' अत्यन्त लोकप्रिय हुए। उन्हें भारतीय संस्कृति एवं इतिहास से अधिक लगाव था। राष्ट्रीय धरातल पर स्वतन्त्रता की भावना का स्फुरण करने वाले कवियों में 'रामधारी सिंह दिनकर जी' का अपना विशिष्ट स्थान है।

रामधारी सिंह दिनकर की रचनाएँ

काव्य–रेणुका, हुँकार, रसवन्ती, कलिंग विजय, बापू, नीम के पत्ते, कुरूक्षेत्र, नील कुसुम, उर्वशी। गद्य–मिट्टी की ओर, अर्द्ध–नारीश्वर, संस्कृति के चार अध्याय।

दिनकर जी के काव्य स्वभाव में प्रकृति के प्रति एक अबोध आकर्षण है। वे समस्त प्राकृतिक व्यापारों में एक आत्मीयता का अनुभव करते हैं। इसलिए जहाँ भी उन्होंने प्रकृति वर्णन किया है वह मार्मिक और सजीव है। उसके यथार्थ वर्णन के कारण उसमें गीतात्मकता की अपेक्षा कथात्मकता अधिक है। दिनकर जी की काव्य भाषा विशुद्ध खड़ीबोली हैं। तत्सम शब्दों का प्रयोग बड़ी सफलता के साथ हुआ है। शब्द योजना पुष्ट और भावानुकूल है। भावों की शिथिलता भाषा में ही मिलती। उनकी भाषा शैली पूर्णरूप से विचारों और भावों की अभिव्यक्ति करने में समर्थ है। प्रत्येक शब्द विचार और भावों का वाहक बन गया है। दिनकर जी के काव्य में कहीं भी क्लिष्ट शब्द योजना नहीं मिलेगी। शब्दों का तोड़ मरोड़ और व्याकरण की अशुद्धियाँ नहीं मिलतीं। शाब्दिक चमत्कार तथा साहित्य प्रदर्शन के चक्कर में दिनकर जी कहीं नहीं पड़े। लाक्षणिता तथा व्यंजक शब्दों का प्रयोग भी उन्होंने बहुत कम किया है। इसलिए इनकी शैली अत्यन्त परिमार्जित और प्रौढ़ है। सरलता और सुबोधता ही भाषा की अपनी सौन्दर्य विशेषता है। दिनकर जी की छन्द–योजना में नवीनता है तथा अलंकारों के प्रयोग में भी स्वाभाविकता है। उनकी समस्त रचनाओं में भाव और भाषा का सामंजस्य मिलता है। रामधारी सिंह दिनकर का नाम प्रगतिवादी विचारक कवियों में लिया जाता है। इन्होने अपने काव्यों में राष्ट्रियता,भारतीय संस्कृति,युद्ध व शांति किसानों की दयनीय दशा उच्च वर्ग का शोषण एवं जीवन के अनेकों क्षेत्रों जैसे सभी विषयों का सजीव चित्रण किया है। कवि ने 'परशुराम का उपदेश' कविता द्वारा देशवासियों में ओज और वीरता का भाव भरा है। अन्याय और अत्याचार के प्रति आवाज उठाना मानव का धर्म है और उसको सहना कायरों का काम है। मानव को प्रकृति से अनेक शक्तियाँ प्राप्त होतीं है। प्रत्येक भारतवासी अपनी शक्ति को पहचाने और एक जुट होकर शत्रु से लड़े। इसलिए कवि देशवासियों से कहता है–'बाहों की विभा सँभालो।' इस कविता में प्रतिकों, अलंकारों, और लाक्षणिक प्रयोगों से दिनकर ने काव्य सौंदर्य बख़ूबी उभारा है।

"लाखों क्रौंच कराह रहे हैं,
जाग, आदि कवि की कल्याणी?
फूट–फूट तू कवि–कंठों से,
बन व्यापक निज युग की वाणी।"

कविता अपने युग की वाणी बनती है। वह अपने समय के हर वर्ग एवं शोषितों की आवाज बनती है। समाज में व्याप्त अंधविश्वास, आडंबर, पाखंड को खत्म कर एक स्वस्थ व जागृत समाज निर्माण में योगदान दें। और राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर अपनी कविता के जरिये जीवन भर यही करते रहे। दिनकर के रचनाओं में उनके विचार और सोचों को दर्शाती है। दरअसल, आधुनिक युग में हिन्दी काव्य में पौरुष का प्रतीक और राष्ट्र की आत्मा का गौरव गायक जिस कवि को माना जाता है, उसी का नाम रामधारी सिंह 'दिनकर' है। दिनकर यशस्वी भारतीय परम्परा के अनमोल धरोहर हैं, जिन्होंने अपनी कालजयी रचनाओं के जरिए देश निर्माण और स्वतंत्रता संघर्ष में स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दिया था। 'कलम आज उनकी जय बोल' जैसी प्रेरणादायक कविता और उर्वशी जैसे काव्य के प्रणेता रामधारी सिंह दिनकर ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में अनवरत लेखन किया, लेकिन उनकी विशिष्ट पहचान कविता के क्षेत्र में ही बनी। उन्होंने कविता में पदार्पण भले ही छायावाद और श्रृंगार रस से प्रभावित होकर किया हो, लेकिन समय के साथ–साथ उनकी कविता निरंतर राष्ट्रीयता और स्वातंत्र्य प्रेम का पर्याय बनती चलीई।

दिनकर ने अपनी इस राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय प्रेम को स्वीकार्य करते हुए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोह के अवसर पर कहा था कि "जिस तरह जवानी भर मैं रवीन्द्र और इक़बाल के बीच झटके खाते रहा, उसी तरह जीवन भर मैं गांधी और मार्क्स बीच भी झटके खाता रहा हूँ। इसीलिए उजले को लाल से गुणा करने पर जो रंग बनता है वही रंग मेरी कविता का है और मेरा विश्वास है कि भारतवर्ष के भी भावी व्यक्तित्व का रंग यही होगा।" उनकी रचनाओं में स्वदेश को युवा पीढ़ी भी अपनी कुर्बानी से मुक्त करवा सकती है।कुछ ऐसी ही भावना इन पँक्तियों में दिखाई देती है-

"नए सुरों थिंजनी बजा रही जवानियाँ
लहू में तैर–तैर के नहा रही जवानियाँ"

दिनकर स्वच्छंदतावाद के कवि कहे जाते हैं और बंधनों, रूढ़ियों को तोड़ना उनकी कविताओं की विशेषता है। लेकिन, व्यक्ति स्वातंत्र्य उनके चिंतन में नहीं दिखाई देता। कवि की स्वच्छंदता की भावना और चेतना अद्भुत कल्पना प्रवण,अव्यावहारिक तथा मिथकीय बिम्बों, प्रतीकों,ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के माध्यम से व्यक्त होती हैं। दिनकर की काव्य चेतना में विविधता और विषय वस्तु की दृष्टि से बहुलता दिखाई देती है।उसमें देशभक्ति से परिपूर्ण राष्ट्रीय चेतना है और विषमता को मिटाकर सामाजिक समानता स्थापित करने की भावना है। ईश्वर को चुनौती देने वाले वाला कवि जब भीष्म जैसे महारथी को केंद्र में रखकर रचे काव्य "कुरुक्षेत्र" में पूछता है–

"धर्म का दीपक, दया का दीप
कब जलेगा, कब जलेगा

विश्व में भगवान" तो कवि की अशक्तता और अधीरता का बोध होता है।

दिनकर की पँक्तियों में धरती के प्रति आकर्षण दिखता है, स्वर्ग के प्रति नहीं। दिनकर जी वस्तुओं पर कम, अपने मन पर पड़े प्रभाव को कविता के रूप में अदम्य भाषा शैली में बहुत प्रभावकारी ढंग से प्रस्तुत करते हैं–

"व्योम कुंजो की परी अभिकल्प ने
भूमि को निज स्वर्ग पर ललचा नहीं
पा न सकती मृत्ति उड़कर स्वप्न को
युक्ति हो तो आ बसा अलका यहीं" ('रेणुका')

छात्र जीवन से ही संघर्षों और चुनौतियों से जूझते हुए दिनकर ने बचपन से जवानी तक के सफ़र में अनेक उतार–चढ़ाव देखे। इस संघर्षों ने दिनकर के विचारों और सोच को एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया। इस परिवेश का परिणाम ही था कि जुझारूपन उनके व्यक्तित्व की एक प्रमुख प्रवृत्ति बन गया। हालांकि, तमाम उतार–चढ़ाव के बावजूद दिनकर की पैनी नजर अपने युग की हर छोटी–बड़ी घटनाओं पर केंद्रित रही। अपने युग की हर सांस को वे पहचानते थे और इसका विस्फोट उनकी कविताओं और रचनाओं में खूब देखने को मिलता है। तभी तो दिनकर यह ललकारते हुए दिखते हैं कि

"सुनुँ क्या सिंधु मैं गर्जन तुम्हारा, स्वयं युग–धर्म का हुंकार हूँ मैं
कठिन निर्घोष हूँ भीषण अशनि का, प्रलय गांडीव का टंकार हूँ मैं।"

हिंदी काव्य जगत में क्रांति, ओज और प्रेम के सृजक के रूप में उनका योगदान अविस्मरणीय है और उनकी काव्यगत विशेषताएँ अद्वितीय हैं। दिनकर अपने युग के प्रतिनिधि कवि और भारतीय जनजीवन के निर्भीक रचनाकार के रूप में हमेशा हिंदी साहित्य के जगत में मूर्धन्य रहेंगे।

संदर्भ सूची

1. दिनकर – संचयिता, 34
2. दिनकर – रेणुका, 86
3. वही – 43, 45
4. दिनकर – रेती के फूल,7